

*** राजभोग के पद ***

भोजन बिहारीलाल कौ सो तौ में जानी।
दरसन प्यारी रूप कौ पुतरिन रुचिमान्नी॥
प्यारे की मृदु मुसकनि मीठी लगें भौंहनि कटुताई।
षट्स वारों कोटि लों दृग चंचलताई॥
प्यारे कों चाह छिन-छिन चौगुनी जैमत रुचि ज्योंही।
अलि भगवान जुगल रस वरन्यों जात न त्योंहि॥१॥

भोजन करत दुहँ दिशि देखों।
कहत न बनत विनोद बिहारी बिहारिन लै उर लेखों॥
अंग-अंग अवलोकि लेत दोठ छुधित स्वाद की शेखों।
वचन रचन रुचि में रुचि पावत सब रस रसिक विशेषों॥
पान करत मकरन्द पिया पिय अवधि प्रेम की रेखों।
यहि आहार-बिहार निरन्तर करत न पाक परेखों॥
यह रस तुष्ट-पुष्ट मेरे प्यारे तुम सुन्दर वर वेषों।
श्रीबिहारिनदास कहत नैनन सों तुम जिन लगौ निमेषों॥२॥

भोजन कीजै श्रीकुंजबिहारी।
सामग्री सब सोंज बनाई ओ कछु रुचि है तिहारी॥
मधुर-मधुर सब अधर धरे हैं तुरसादिक रुचि भारी।
जो कछु भयौ सो धरयौ प्रभु आगे वसुधा सब जो तिहारी॥३॥
श्रीनाथ रसिकवर पान लिये हैं अरु जमुनोदक झारी।
अचमन करि कर पान लिये हैं श्री प्यारी जू प्रेम निहारी॥
श्रीहरिदास जू चमर दुरावें शोभा सिन्धु महारी॥

मेरौ लाल रंगीलौ रंग भरयौ।
जो भावे सो करौ किशोरी मोहन तेरे वश परयौ॥
जमुना पुलिन निकुंज भवन में सर्वस सुचि ताकौ धरयौ।
श्रीबीठलविपुल विनोद बिहारी सगुन गाँठ दै वर वरयौ॥४॥

*** आचमन ***

भोजन करि बैठे दुलहिन दूलहु।
अचमन करत कमल आनन सखि-निरख-निरख छबि फूलहु॥
बीरी परस्पर लेत खबावत रूप वेश सम तूलहु।
दासबिहारिन विपुल रसिकवर श्रीहरिदासी सम्पति रस झूलहु॥५॥

Website : www.bankeybihari.info

Phone : +91-9897919717, 9897233358